



दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

दक्षिण-दक्षिण और त्रिकोणीय सहयोग (SSTC):
केवल एक राजनायिक वाक्यांश नहीं

दक्षिण-दक्षिण और त्रिकोणीय सहयोग (SSTC): केवल एक राजनयिक वाक्यांश नहीं

संदर्भ

- दक्षिण-दक्षिण एवं त्रिकोणीय सहयोग भू-राजनीतिक परिवृत्ति में परिवर्तन, बढ़ती असमानताओं और घटती विकास सहायता के कारण वैश्विक विकास में एक परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में उभरा है।

दक्षिण-दक्षिण और त्रिकोणीय सहयोग के बारे में

- ब्यूनस आयर्स कार्य योजना (BAPA), 1978** ने विकासशील देशों के बीच एक लेन-देन संबंधी मॉडल बनने से कहीं आगे बढ़कर, पारस्परिक सम्मान, साझा शिक्षा और एकजुटता के सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया।
- नैरोबी परिणाम दस्तावेज (2009)**: इस पर केन्या के नैरोबी में दक्षिण-दक्षिण सहयोग पर संयुक्त राष्ट्र उच्च-स्तरीय सम्मेलन में वार्ता हुई और इसे UNGA द्वारा अपनाया गया।
 - इसने विकासशील देशों के बीच सहयोग (दक्षिण-दक्षिण सहयोग) के संचालन के लिए मार्गदर्शक सिद्धांतों को परिभाषित किया, जो तकनीकी सहायता से आगे बढ़कर राजनीतिक, संस्थागत और अवसंरचनात्मक सहयोग को भी शामिल करता है।
- दक्षिण-दक्षिण सहयोग (SSC)** को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया गया है जहाँ दो या दो से अधिक विकासशील देश ज्ञान के आदान-प्रदान, कौशल, संसाधनों और तकनीकी जानकारी के माध्यम से व्यक्तिगत या साझा क्षमता विकास उद्देश्यों को प्राप्त करते हैं।
 - इसमें सरकारें, क्षेत्रीय संगठन, नागरिक समाज, शिक्षा जगत और निजी क्षेत्र शामिल हैं।
 - यह उत्तर-दक्षिण सहयोग का पूरक है, न कि उसका विकल्प।
- त्रिकोणीय सहयोग को 'दो या दो से अधिक विकासशील देशों के बीच दक्षिण-संचालित साझेदारी, जिसे किसी विकसित देश या बहुपक्षीय संगठन द्वारा समर्थित किया जाता है' के रूप में परिभाषित किया गया है।
 - यह दक्षिणी साझेदारियों को सुदृढ़ करने और क्षेत्रीय एकीकरण को बढ़ावा देने के लिए वित्तीय, तकनीकी और अनुभवात्मक सहायता प्रदान करता है।

दक्षिण-दक्षिण सहयोग के प्रमुख सिद्धांत

- साझा अनुभवों, एकजुटता और उद्देश्यों पर आधारित साझा प्रयास।
- राष्ट्रीय संप्रभुता, स्वामित्व और प्राथमिकताओं का सम्मान।
- समान वर्ग के लोगों के बीच, बिना किसी शर्त के साझेदारी।
- ज़मीनी स्तर पर विकास परियोजनाओं के साथ संरेखित पारस्परिक जवाबदेही और पारदर्शिता।
- बहु-हितधारक जुड़ाव**: गैर-सरकारी संगठन, निजी क्षेत्र, नागरिक समाज, शिक्षा जगत।
- विषय (2025)**: 'एसएसटीसी के माध्यम से नए अवसर और नवाचार'

एसएसटीसी की समकालीन प्रारंभिकता

- वैश्विक चुनौतियों का जवाब: 80 करोड़ से अधिक लोग अभी भी अत्यधिक गरीबी में जी रहे हैं, और कई विकासशील देश स्वास्थ्य और शिक्षा जैसी आवश्यक सेवाओं की तुलना में क्रृष्ण चुकौती पर अधिक व्यय करते हैं।
 - एसएसटीसी स्थानीय वास्तविकताओं के अनुरूप घरेलू, मापनीय समाधान प्रदान करता है—जलवायु-अनुकूल कृषि से लेकर डिजिटल वित्त और स्वास्थ्य नवाचारों तक।
- एकजुटता के माध्यम से सशक्तिकरण: एसएसटीसी आपसी सम्मान, साझा शिक्षा और संप्रभुता पर आधारित है, पारंपरिक सहायता मॉडल के विपरीत जो प्रायः शर्तों के साथ आते हैं।
 - यह आत्मनिर्भरता और लचीलेपन को बढ़ावा देता है, जिससे देश बाहरी उपायों पर निर्भर रहने के बजाय मिलकर समाधान तैयार कर सकते हैं।
- सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के लिए उत्प्रेरक: एसएसटीसी 2030 तक सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को प्राप्त करने के लिए एक प्रमुख इंजन है, विशेषतः जब पारंपरिक सहायता प्रवाह में गिरावट आ रही है।
 - यह स्थानीय स्वामित्व वाले, लागत-प्रभावी नवाचारों के माध्यम से कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा और प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में बदलाव ला रहा है।

एसएसटीसी में प्रमुख चिंताएँ और चुनौतियाँ

- विखंडन और समन्वय का अभाव: विविध राजनीतिक प्रणालियाँ, आर्थिक प्राथमिकताएँ और ऐतिहासिक संदर्भ प्रायः विखंडित प्रयासों और वैश्विक मुद्दों पर एकीकृत दृष्टिकोण बनाने में कठिनाई का कारण बनते हैं।
 - यह एसएसटीसी पहलों के प्रभाव को कम कर सकता है और सहयोग के लिए एकजुट मंचों के निर्माण में बाधा उत्पन्न कर सकता है।
- सीमित संस्थागत क्षमता: कई विकासशील देशों में एसएसटीसी परियोजनाओं को लागू करने और बनाए रखने के लिए तकनीकी, वित्तीय और संस्थागत क्षमता का अभाव है।
 - राजकोषीय बाधाएँ और उभरती भू-राजनीतिक गतिशीलता सामूहिक कार्रवाई के लिए गंभीर चुनौतियाँ प्रस्तुत करती हैं।
- वित्तपोषण और संसाधन अंतराल: एसएसटीसी प्रायः ट्रस्ट फंड और स्वैच्छिक योगदानों पर निर्भर करता है, जैसे कि भारत-संयुक्त राष्ट्र विकास साझेदारी कोष या आईबीएसए कोष।
 - ये तंत्र हमेशा पूर्वानुमानित या बढ़ती विकास आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं होते हैं।
- राजनीतिक इच्छाशक्ति और अनुवर्ती कार्रवाई: प्रतिबद्धताओं पर असंगत अनुवर्ती कार्रवाई को लेकर चिंताएँ हैं, जबकि भारत जैसे देशों ने एसएसटीसी के लिए सुदृढ़ समर्थन दिखाया है।
 - उदाहरण के लिए, भारत-अफ्रीका मंच शिखर सम्मेलन 2015 से ही लंबित है, जिससे निरंतर जुड़ाव पर सवाल उठ रहे हैं।
- त्रिकोणीय सहयोग की जटिलताएँ: विकसित देशों या बहुपक्षीय संगठनों को शामिल करने से मूल्य में वृद्धि होती है, लेकिन शक्ति विषमताएँ और नौकरशाही बाधाएँ भी आती हैं।

संयुक्त राष्ट्र (यूएन) और यूएनडीपी की भूमिका

- संयुक्त राष्ट्र 12 सितंबर को एसएसटीसी का स्मरण करता है और समावेशी साझेदारी एवं सतत विकास को बढ़ावा देने में इसकी भूमिका को मान्यता देता है।
- दक्षिण-दक्षिण सहयोग के लिए संयुक्त राष्ट्र कार्यालय (यूएनओएसएससी): यह एसएससी और टीआरसी पहलों में सुसंगतता और समन्वय का समर्थन करता है।
- यूएनडीपी ने अपनी रणनीतिक योजना (2014-2017) में एसएसटीसी को एक मुख्य कार्य दृष्टिकोण के रूप में शामिल किया।
- यह वैश्विक, क्षेत्रीय और देश स्तर पर एसएसटीसी का समर्थन करने के लिए एक परिचालन शाखा के रूप में कार्य करता है।
- यूएनडीपी ज्ञान मध्यस्थ, क्षमता विकास समर्थक और साझेदारी सूत्रधार के रूप में कार्य करता है।

भारत की भूमिका और दर्शन

- वसुधैव कुटुम्बकम (विश्व एक परिवार है):** खाद्य-घाटे से खाद्य-अधिशेष अर्थव्यवस्था में भारत का विकास - जो विश्व के सबसे बड़े खाद्य सुरक्षा जालों में से एक पर आधारित है - स्वदेशी समाधानों की शक्ति को दर्शाता है।
- वसुधैव कुटुम्बकम (विश्व एक परिवार है)** का इसका दर्शन एसएसटीसी के समावेश और सहयोग के मूल्यों के अनुरूप है।
- भारत डिजिटल परिवर्तन, जलवायु परिवर्तन, स्वास्थ्य प्रणालियों और सतत वित्तपोषण में लागत प्रभावी, स्थानीय रूप से प्रासंगिक नवाचारों का केंद्र बनकर उभरा है।
- प्रमुख योगदान:**
 - “वॉयस ऑफ द ग्लोबल साउथ” शिखर सम्मेलनों की मेजबानी;
 - अफ्रीकी संघ की G20 अध्यक्षता के दौरान स्थायी सदस्यता सुनिश्चित करना;
 - विकास साझेदारी प्रशासन की स्थापना;
 - 160 से अधिक देशों में भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग (ITEC) कार्यक्रम का विस्तार;
 - भारत-संयुक्त राष्ट्र विकास साझेदारी कोष की शुरुआत और आधार तथा UPI जैसे डिजिटल नवाचारों को वैश्विक स्तर पर साझा करना।
- भारत-WFP साझेदारी:** भारत और विश्व खाद्य कार्यक्रम (WFP) छह दशकों से भी अधिक समय से वैश्विक प्रासंगिकता वाले समाधानों का सह-निर्माण कर रहे हैं। इसने निम्नलिखित नवाचारों का संचालन किया:
 - अन्नपूर्ति (अनाज एटीएम);
 - खाद्य वितरण में आपूर्ति शृंखला अनुकूलन;
 - महिलाओं के नेतृत्व वाला टेक-होम राशन कार्यक्रम;
 - राष्ट्रीय चावल सुदृढ़ीकरण परियोजना;

दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न: दक्षिण-दक्षिण और त्रिकोणीय सहयोग के प्रति भारत के दृष्टिकोण ने उसकी वैश्विक विकास साझेदारियों को किस प्रकार आकार दिया है और यह किस सीमा तक समानता, पारस्परिक लाभ और एकजुटता के सिद्धांतों को प्रतिबिंबित करता है?

Source: HT